वीरांगना रानी दुर्गावती

(खण्ड काव्य : बुन्देली बोली में)

डॉ. पूरनचंद श्रीवास्तव

Scanned with OKEN Scanner

वीरांगना रानी दुर्गावती

[खण्ड काव्य : बुँदेली बोली में]

डॉ. पूरनचन्द श्रीवास्तव

डॉ. पूरनचन्द श्रीवास्तव लोक विज्ञान शोध संस्थान
473, दीक्षितपुरा, टीचर्स कालोनी, जबलपुर - 482002

Scanned with OKEN Scanner

© डॉ. पूरनचन्द श्रीवास्तव लोक विज्ञान शोध संस्थान (रजि. क्र. जे.जे. 2584)
'आम्रछाया' 473, दीक्षितपुरा, जबलपुर - 482002 फोन : (0761) 542421

प्रथम पुष्प

सम्पर्क : 'साईं कृपा' 576, कमला नेहरू नगर, गढ़ा रोड, जबलपुर
फोन : (0761) 412283

❑ प्रथम संस्करण - 1958
❑ डॉ. पूरनचंद श्रीवास्तव के जन्म दिवस 1 सितम्बर पर पुर्नावलोकित संस्करण - 2002

मूल्य : 100.00 मात्र

मुद्रक :
नर्मदा साईं आफसेट
836, नया मोहल्ला
जबलपुर (म.प्र.)
फोन : (0761) 310089

डॉ. पूरनचंद श्रीवास्तव

'वीरांगना रानी दुर्गावती' के रचनाकार हमारे प्रमुख-परम सहोदर डॉ. पूरनचंद श्रीवास्तव की अभिरुचि 'बुंदेली' में विशिष्ट बनाने का श्रेय हमारी दिवंगत माता श्री को है। उनका पुण्य आशीष ही फलित हुआ है।

हमारे अग्रज डॉ. श्रीवास्तव का प्रारंभिक जीवन ग्राम परिवेश में चारों ओर हरी-भरी पहाड़ियों-मैदानों तथा कल-कल कर बहने वाली नदी और छल-छल कर बहने वाले नालों के बीच घिरा हुआ है - इस कारण उनकी कृतियों में किसी न किसी रूप में प्रकृति-दर्शन अवश्य होते हैं। भारत मूलतः ग्रामों का देश है, अतः भारतीय संस्कृति और सामाजिक आचार-विचार के चित्रण में अत्यधिक सहज दिव्यता पाई जाती है। बंधुवर का सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय रहा है। वे कर्म करने एवं सत्य-निष्ठा तथा परम्परागत सामाजिक मूल्यों के हामी होते हुए भी आधुनिक औद्योगिक विकास के संदर्भ में भाषा के नव-रूप के गठन में विश्वास करते हैं। रूढ़त्व में डूबती जाने वाली बोली से बंधकर रहना प्रगतिशीलता नहीं है।

खड़ी बोली में विरचित उनके साहित्य एवं भाषा विज्ञान से संबंधित पुस्तकों का अपना निजी मूल्य है। कृति-परिचय आदि अन्यत्र दिया गया है। वे जीवन की कश्मलताओं से दूर, ऊपर रहते हैं। जीवन की समग्रता में ही उनका विश्वास है। इसके कारण ही लोक (संस्थाओं) ने उनका आवंदन-अभिनंदन किया है।

'साई कृपा' 576, कमला नेहरु नगर
गढ़ा रोड, जबलपुर - 482002
फोन : 0761-412283

-प्रभातचंद श्रीवास्तव, एम.लिब,एस-सी.
पुस्तकालय विज्ञानी

Scanned with OKEN Scanner